'' उत्तर पथ '' की समीक्षा के बहाने अध्यात्म की यात्रा

मध्य प्रदेश लेखक संघ और तुलसी मानस प्रतिष्ठान के संयुक्त तत्वाधान में रामनवमी के अवसर पर मानस–भवन भोपाल में आयोजित साहित्यकार श्री प्रभुदयाल मिश्र के ' उत्तर पथ ' की समीक्षा भोपाल के बुद्धिजीवियों और विचारकों की सघन आध्यात्म – यात्रा थी । जीवन और जगत के उन्नत तथा संप्रश्नात्मक पथ का चयन किसी आयोजना का मुखापेक्षी नहीं कहा जा सकता, किन्तु कार्यक्रम के प्रबुद्ध वक्ताआने नें जितनी लम्बी अवधि तक श्रोताओं को मंत्रमुग्ध रखा उससे तो यही प्रतीत हुआ (जैसा कि डा. भास्कराचार्य त्रिपाठी ने अपने वक्तव्य में कहा – ' जेहि दिन राम जनम श्रुति गावाहिं, तीरथ सकल तहां चलि आवाहिं । '

जीवन का उत्तर – पथ / पक्ष संसार से ऊपर अस्तित्व के रहस्यावरणों को चीरकर ही निकल सकता है । यहॉ तक कि इस यात्रा में संसार के संबंध और उनसे बनने वाली समस्त श्रंखलायें भी नया आकार लेने लगती हैं । शब्दों की अपनी सीमा और अर्थो के अपने संकोच के बावजूद यदि श्री मिश्र की यह कृति इतने विचारकों का अलोड़न कर सकी तो यह कृतिकार का वास्तविक ''संतोष'' है , आयोजन के बहुसंख्य श्रोताओं को तीन घंटे के पश्चात् यह स्पष्ट अवधारणा थी ।

कार्यक्रम का आरम्भ मध्य प्रदेश लेखक संघ के उपाध्यक्ष और वरिष्ठ कवि तथा साहित्यकार श्री राजेन्द्र जोशी के सम्बोधन से हुआ । उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि जहॉ लेखक संघ प्रदेश के रचनाधर्मियों को प्रोत्साहित करता है वहीं तुलसी मानस प्रतिष्ठान आध्यात्म के मानस में संतरण के लिये बना एक तरणताल है । इन संस्थाओं के संगम में भोपाल के प्रबुद्ध और विचारशील नागरिकों का एकत्रीकरण भोपालवासियों की विचार यात्रा को निश्चित ही विकास की एक नई दिशा प्रदान करेगा ।

लेखक संघ के सचिव, श्री कैलाश जायसवाल ने आरंभ में कृतिकार तथा उपस्थित सभी समीक्षकों और मान्य अतिथियों का परिचय दिया तथा विद्वानों, विचारकों और साहित्यकारों की विशिष्ट उपस्थिति को मणिकांचन सहयोग बताया ।

आरंभ में श्री जमुनाशंकर ठाकुर द्वारा श्री गंगारामजी का विस्तृत समीक्षा–पत्र पढ़ा गया । विद्वान, संस्कृतज्ञ श्री शास्त्री ने अपनी समीक्षा में कृति के प्रत्येक खंड और संस्मरणों में अन्तर्गुम्फित लेखक की अन्तर्यात्रा का सटीक परिचय दिया । उन्होंने उपनिषदों, शास्त्रों और रीति ग्रन्थों के सहारे कृति को अपरिहार्य दस्तावेज निरूपित किया ।

युवा और तरुण साहित्यकार श्री निलिम्प त्रिपाठी ने लेखक की गुरुओं प्रति रूढ़िवादी दृष्टि के प्रति उछाले कुछ प्रश्नों का ल्लेख करते हुए लेखक के सकारात्मक और दृढ़ अवस्था परक दृष्टिकोण को अनुकरणीय बताया ।

पंडित गंगाराम जी त्रिपाठी ने स्वीकार किया कि समीक्षा हेतु प्रस्तुत कृति संभवतः एक विशिष्ट बौद्धिक वर्ग को ध्यान में रखते हुए लिखी गई है । किन्तु आज के विशिष्ट वातावरण में इसकी उपयोगिता निश्चित ही असंदिग्ध है । उन्होंने महेश

योगी से संबंधित अपने स्वंय के संस्मरणों का भी सविस्तार उल्लेख करते हुए लेखक के अन्तर्वृत को परिपुष्ट किया ।

श्री यमुना नारायण मिश्र ने अपनी सरल शैली में कहा कि लेखक ने गुरुओं की खोज में रहते हुए अपनी बुद्धि को तो कहीं गिरवी रखा ही नहीं, उसने आज की, ' गुरुडम ' की परंपरा के प्रति समसामायिक व्यंग्य भी किया है ।

श्री भास्कराचार्य त्रिपाठी ने अपने शोधपूर्ण सम्बोधन में उत्तरपथ के जाति स्मरण प्रसंग का उल्लेख करते हुए ' राम–कथा ' के एक आख्यान के प्रत्यक्षदर्शी लेखक के ग्रन्थ पर रामनवमी के दिन चर्चा का विशेष महत्व प्रतिपादित किया । उन्होंने रामचरितमानस में ' उत्तर ' शब्द की आवृत्ति तथा इसके शास्त्रीय पक्ष का विद्वतापूर्ण विश्लेषण भी किया ।

कृतिकार श्री मिश्र ने अपनी कृति की रचना प्रकिया पर बोलते हुए कहा कि उनका प्रयास काल और क्षण के सत्य को लेखकीय धर्म में बांधने की चेष्टा रही है । उन्होंने दार्शनिकों, साहित्यकारों तथा द्रष्टाओं के जीवनवृत्त के हवाले एक गवाक्ष खोलने की पहल भर की है । भला आकाश जैसा विराट कोई भी जीवनानुभव शब्दों में तो वैसे भी नहीं बांधा जा सकता । कार्यक्रम के अध्यक्ष, पंडित ईशनारायण जोशी ने पाल ब्रन्टन की ' रहस्यमय भारत की खोज ' का उल्लेख करते हुए श्री मिश्र के उसी दिशा में किये गये प्रयास की सराहना की ।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री प्रभुदयाल अग्निहोत्री ने श्री मिश्र द्वारा जीवन और मृत्यु के रहस्यों के संबंध में उछाले गये प्रश्नों को प्रासंगिक, अर्थपूर्ण और गहन अनुभवसिद्ध प्रतिपादित किया । उन्होंने कहा कि शब्दों से सत्य को अब तक कोई नहीं बांध सका है, किन्तु ऐसे प्रश्न भी हजारों उत्तरों से अधिक अर्थपूर्ण हैं जो हमें सत्य के साक्षात्कार की ओर मोड़ते हैं । छयासी वर्षीय वयोवद्ध मनीषी और ऋषि तुल्य श्री अग्निहोत्री ने अपने जीवन के इस अवसर पर अनेक अछूते प्रसंगों को छुआ तथा श्रोताओं को बहुत देर तक आबृद्ध रखा ।

कार्यक्रम के अन्त में तुलसी मानस प्रतिष्ठान के कार्यकारी अध्यक्ष ने उपस्थितों का आभार प्रकट करते हुए आध्यात्म और दर्शन के विषयों के अन्वेषण में मानस भवन की अभिन्न भूमिका प्रतिपादित की ।

कार्यक्रम के कुशल और संवेदनशील संचालनकर्ता श्री कैलाश जायसवाल ने अन्त में कार्यक्रम की सफलता को रेखांकित करते हुए कहा भोपाल के प्रबुद्ध विचारकों की इस सभा द्वारा जीवन के श्रेष्ठतर पक्ष (उत्तर पथ) की समीक्षा के बहाने सत्य के साक्षात्कार के इस आयोजन की अपूर्वता स्वतः सिद्ध हो जाती है ।

रामनवमी
(5 अप्रेल 1998)

मध्य प्रदेश लेखक संघ भोपाल